जनसत्ता, 27-3-16 पृ० 4 (सांविकालीन जनसत्ता)

समुद्री घास

जानकारी

रजनी अरोड़ा

मैदानों से दूर गहरे समुद्र में भी घास होती है जहां कई तरह के जलीय जीव भी रहते हैं। फर्क इतना है कि यह समुद्री घास लंबी-पतले या अंडाकार पत्तेदार पौधे की तरह होती है जिसकी जड़ें समुद्र की रेतीली तलहटी को जकड़े रखती हैं। असल में यह एक समुद्री पौधा है जिसमें फूल और बीज भी होते हैं। समुद्र के खारे पानी में पनपने वाली समुद्री घास छोटे-बड़े कई आकार में दूर-दूर तक फैली रहती है। इसके पत्ते फीते की तरह पानी की लहरों के साथ इधर-उधर हिलते रहते हैं।

कहां पाई जाती है, यह समुद्री घास। अंटार्टिका को छोड़कर दुनिया के सभी महाद्वीपों में पाई जाती है। शीतोष्ण और उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों के महासागरों में इसकी बावन प्रजातियां पाई जाती हैं। इन्हें चार परिवारों में बांटा जा सकता है।

समुद्र के नमकीन पानी में उगने वाली यह घास है बहुत काम की। यह न केवल कई जलीय जीवों का घर और भोजन है बल्कि पर्यावरण को प्रदूषण से दूर रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके पत्तों में नसें और एअर चैनल होते हैं जो सूर्य के प्रकाश से संश्लेषण प्रक्रिया बनाए रखते हैं। इस सिस्टम से समुद्री घास का विकास भी होता है। यह हमारे कार्बनिक कणों, जहरीली गैसों जैसे पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले तत्त्वों को अवशोषित करके वातावरण को साफ बनाती है। हाल ही में सिडनी के वैज्ञानिकों ने अपने अध्ययनों से साबित किया है कि अपने इस गुण से समुद्री घास ग्लोबल वार्मिंग के खतरे को कम करती है और पर्यावरण संतुलन को बनाए रखती है।

दूसरी ओर समुद्री-घास समुद्र के पानी में मौजूद कार्बन डाइऑक्साइड को ऑक्सीजन में बदल देती है। इससे पानी की गुणवत्ता बनी रहती है जिससे कई जीवों को जीवन मिलता है। रेत में गहराई तक फैली समुद्री घास की जड़ें समुद्र तल को स्थिर रखने में मदद करती हैं। यह पानी के तेज बहाव और उठने वाली तेज लहरों को रोकती हैं जिससे समुद्र तल और तटीय क्षेत्रों में भूमि का कटाव को रोकने में मदद मिलती है।

कई जीव निर्भर-वैज्ञानिकों ने यह साबित कर दिया है कि समुद्र में पाए जाने वाले सत्तर प्रतिशत जीव समुद्री-घास पर निर्भर रहते हैं। ये समुद्र की तलहटी से और अपने चारों ओर के पानी से पोषक तत्त्व प्राप्त करते हैं। पोषक तत्त्वों से भरपूर समुद्री घास समुद्री कछुए, कलहंस, छोटी मछलियों, सी-क्यूकुंबर, केकड़ों, स्टारफिश, अर्चिन जैसे जलीय जीवों का मुख्य आहार है। ये जीव एक दिन में करीब 2.5 किलोग्राम ग्रास खा सकते हैं। केकड़ा, झींगा, ब्लू डॉल्फिन, सी-हार्स, लेजर्ड फिश जैसे जीवों के लिए तो समुद्री-घास बेड एक सुरक्षित और आदर्श घर साबित होते हैं। कई जलीय जीवों के लिए लंबी-लंबी समुद्री-घास नर्सरी का काम करती है। इनमें वे अपने बच्चों की देखभाल करते हैं और अपना जीवन बिता देते हैं। इनमें छिप कर वे आसानी से शिकारियों से अपना बचाव करते हैं।

पर्यावरण वैज्ञानिकों ने अपने शोध से साबित किया है कि विश्व स्तर पर हम एक फुटबाल के मैदान के आकार जितनी समुद्री घास हर रोज खो देते हैं। इनके गायब होने के पीछे तेजी से हो रहे विकास और पर्यावरण प्रदूषण से होने वाली ग्लोबल वार्मिंग प्रमुख कारण हैं। ग्लोबल वार्मिंग से जहां हमारी धरती प्रर लगातार समुद्र तलहटी का फैलाव हो रहा है और पानी का संकट मंडरा रहा है। जाने-अनजाने कीटनाशकों, तेलों, उर्वरकों या सीवेज के प्रवाह से जल प्रदूषण होता है। इससे पानी के तापमान और गुणवत्ता में कमी आती है जिसका असर समुद्री-घास और जलीय जीवों पर भी पड़ता है। ❑

27-3-16

उप प्रभारी, समाचार पत्र यूनिट